International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(2): 87-90

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(2): 87-90
© 2017
www.anantaajournal.com
Received: 13-02-2017
Accepted: 16-03-2017

डॉ. राधाकृष्ण
एसोशिएट प्रोफेसर, के0ए0(पी0जी0) कॉलेज, कासगंज, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. राधाकृष्ण
एसोशिएट प्रोफेसर, के0ए0(पी0जी0) कॉलेज, कासगंज, उत्तर प्रदेश, भारत

अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण में ज्योतिष

डॉ. राधाकृष्ण

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य संस्कृति और संस्कारों ने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया हैं। सत् जीवन की अभिलाषा किसे नहीं होती? मानव जीवन निरंतर सुख, शांति, आनन्द, और, ज्ञान की ओर अग्रसर होता है, किन्तु इस मार्ग का अनुगमन करने के लिए उसे मार्गदर्षक व्यक्ति या अनुभव सिंचित सूत्रों की आवष्यकता होती है। भारतीय ऋषियों ने सम्पूर्ण चराचर के कल्याण के लिए ही नित नई खोजें की हैं, आध्यात्म, आयुर्वेद, योग ही नहीं, उन्होने सम्पूर्ण खगोल को भी मथ डाला था, और ग्रहों, नक्षत्रों, तारामण्डलों की उपस्थिति, दूरी, आकार–प्रकार के अतिरिक्त पृथ्वी पर उनके प्रभाव व मानव जीवन के संचालन में उनकी भूमिका को भी प्रमाणित रूप से जानकर उसे ही 'ज्यातिष विज्ञान' के रूप में प्रतिस्थापित किया था।

'अहमदबख्स थानेसरी कृत रामायण' हरियाणवी में प्रकाषित प्रथम रामायण है। इसकी रचना लगभग एक शताब्दी पूर्व थानेसर (कुरूक्षेत्र) के प्रसिद्व एंव जनप्रिय लोक कवि 'अहमदबख्स' ने की थी। हरियाणा की विषिष्ट लोक नाट्य षैली साँग के शुद्ध रूप चम्बोलों में अनुबन्धित इसका अनेक बार मंचन हो चुका है।''[1] अहमदबख्स हिन्दू धर्मषास्त्रों के प्रति पूर्ण निष्ठा रखने वाले मुस्लिम कवि थे। सम्पादक बालकृष्ण मुज़्तर उनके सम्बन्ध में स्पष्ट करते हैं कि–'' कवि अहमदबख्स जाति से कंचन था। उसके एक मात्र संतान एक लड़की ईदन थी। कंचन गाने बजाने वाली एक एक जाति है। उस समय थानेसर नगर में सांग करने वालों के दो दल या अखाड़े थे। एक आखड़े का नाम भादर का अखाड़ा था। भादरसिंह जाति से बढ़ई था। उसके अखाड़े के सांग पुरानी अनाज मण्डी, जो आजकल सब्जी मण्डी कहलाती है, में जमते थे, प्रस्तुत पुस्तक रामायण का रचयिता कवि अहमदबख्स इसी अखाड़े से सम्बन्धित था।''[2] अहमदबख्स थानेसरी के व्यक्तितव का चित्रण करते हुए बालकृष्ण मुज़्तर कहते हैं कि– ''मेरे पिता श्री पं. राजाराम भारद्वाज जिनका देहावसान 95 वर्ष की आयु में 1970 ई0 में हुआ, के कथनानुसार, वह गौर वर्ण, मझोले कद, का हंस मुख व्यक्ति था। सफेद धोती, सफेद कुर्ता, काला जूता और सिर पर जरी की टोपी पहनता था। उसका हिन्दी उर्दू और ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान अपूर्व था। यह ज्ञात नहीं कि वह किस लिपि में सांग लिखता था। उसमें सांग के अनुसार भाषा और शैली में परिवर्तन करने की बेजोड़ क्षमता थी। मुसलमान होते हुए भी हिन्दू धर्म–षास्त्रों की गहरी जानकारी और हिन्दू देवी–देवताओं में ऐसी अटूट निष्ठा और श्रद्धा कवि अहमदबख्स की उदारता प्रकट करती है।[3]

अहमदबख्स थानेसरी की भारतीय संस्कृति के प्रतिनिष्ठा उनके हृदय की विषालता को ही प्रदर्षित नहीं करती, बल्कि इस देष के प्रति उनका प्रेम भी उनके काव्य में स्थान–स्थान पर दिखाई देता है। काव्य के प्रथम भेंट में ही उन्होंने काव्य का आरम्भ भारतीय परम्परा के अनुसार गणेष जी की वन्दना से ही किया है। लेकिन इस प्रथम भेंट में ही उनके ज्ञान और हिन्दू संस्कृति के प्रति अनुराग का पता चल जाता हैं वे 'गणपति' षब्द से पहले उन्हें 'अष्टदेव' कहकर सम्बोधित करते है, तथा भारतीय इतिहास की घटनाओं को भी व्यक्त करते हैं–

''मेरी टेक दीन की राखियों सतपत गत कै संग
अष्टदेव गणपति प्रथम कहूं रजपूती जंग
जिन्हों के शीष घड़ों का है झलका
मुठभेड़ा शूर राठौरों का चौगत्ते अकबर के दल का
चितौड़ टूट विध्वंस हुआ कहूं कारण मुगलों के छल का
इक प्रथम पादषाह का किस्सा उस नगर जोधपुर के थल का।''[4]

अहमदबख्स के ज्योतिष ज्ञान के पूर्व हमें भारतीय दर्षन के सम्बध में उनकी गहरी जानकारी पर प्रकाष डालना अनिवार्य लगता है, क्योंकि दर्षन भारतीय दर्षन को जाने बिना ज्योतिष ज्ञान अधूरा ही रहता है। अहमदबख्स भारतीय दर्षन के 'ब्रहम–तत्व' और उस तत्व के अविनाषी होने पर पूर्ण विश्वास रखते हैं। वे कहते हैं–

''मेरा आदाब हो उस अविनाशी को''
द्वितीय प्रणाम श्री रामचन्द्र और नीलकण्ठ केलाशी को''

यहाँ उन्होंने 'आदाब' और 'प्रणाम' दोनों शब्दों का प्रयोग कर दोनों भाषाओं पर अपनी पकड़ को स्पष्ट कर दिया है। वे आगे कहते हैं–

रघुनन्दन स्वामि को वन्दन घनश्याम कृष्ण बृजवासी को
तुम हे पूर्ण ब्रह्म पार करो अहमद चरणन के दासी को।''[5]

आप इनकी काव्य कला देखिये– रघुनन्दन (राम) धनश्याम (कृष्ण) और दोनों को 'पूर्ण ब्रह्म' कहकर सम्बोधित करते हुए भारतीय दर्शन अनुसार मोक्ष प्राप्त की कामना या आवागमन से मुक्ति या इस संसार से सकुशल पार कर देने की इच्छा को, व्यक्त करना, इनकी दर्शन के प्रति जानकारी सिध्द करता है।
सांग सोरठ में कवि अहमदबख्स 'आठो याम' का उल्लेख करते हैं, तथा 'लाख चौरसी योनि' में आत्मा का विचरण, घट–घट में आत्मा का निवास, पुर्नजन्म की वे अपने काव्य में बात करते हैं। वे अपने काव्य में 'वेद' की चर्चा भी करते हैं। वे कहते हैं कि 'वेद' को सुनकर तो भक्त प्रसन्न होते हैं, और पापी सिर घुनते हैं। वे 'गीता' का उल्लेख भी अपनी रामायण में करते हैं –

''मैं एक एक पल रटना रटूँ निसदिन आठो याम,''
लख चौरासी जिया जन्तु में भेद जिसे घट–घट का
चाहे करो पार मंझादार तुमरे पर टेक रही है
वेदों से सुन के–मरें पापी सिर धुन के।।[6]

एक स्थान पर वे अपनी 'मोक्ष' प्रप्ति के लिए भी भगवान से प्रार्थना करते है। उन्हें भारतीय दर्शन के 'मोक्ष' की परिकल्पना में विश्वास था, अपनी इसी भावना को व्यक्त करते हुए अहमदबख्स कहते हैं–

'भारदसिंह का शिष्य मोक्ष अहमद प्रभु चाहता'[7]
अहमदबख्स थानेसरी अपनी रामायण में ज्योतिषीय घटनाओं का उल्लेख करते हैं, इनघटनाओं का अध्ययन करने से ज्ञात होता हैं, कवि को ज्योतिष शास्त्र की बहुत अधिक जानकारी थीं। किसी हिन्दू पंडित की तरह तिथि, वार, सम्वत, ग्रह, नक्षत्रों का ही
उल्लेख नहीं करते बल्कि किस ग्रह का क्या प्रभाव होता है, उसकी दृष्टि क्या हैं, तथा लग्न आदि भावों का क्या फल है, इन सबका उल्लेख अहमदबख्स अपनी रामायण में करते हैं। भगवान श्रीराम व उनके भाइयों के जन्म के समय क्या नक्षत्र था, क्या लग्न थी ? राजा दशरथ गुरू के माध्यम से अपने पुत्रों के भविष्य जानना चाहते है– कवि कितने मंझे हुए ढ़ग से यह बात गुरू वशिष्ठ से कहलवाता है–

अब बेद रीति से प्रीति करो लड़कों के कौन आसार हुए
तिथ बार लग्न नक्षत्र वर्ग देखों किस प्रकार हुए।[8]
सच सच बताओं देख ग्रह नाम धराओं
इन चारों की आप जन्म कुण्डली बनाओ।[9]

उक्त 'मुकताल' में कवि 'वेदरीति' की बात करने हुए तिथि, बार, लग्न, और नक्षत्र का उल्लेख कर भी यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि उन्हें ज्योतिष का गहरा ज्ञान हैं। वे राजा दशरथ के माध्यम से यह कहलवाते हैं कि आप मेरे इन चारों पुत्रों की जन्म कुण्डली बनाइये। अहमदबख्स वर्णन करते हैं कि राजा के आग्रह को ध्यान में रखकर गुरूवर वशिष्ठ एवं अन्य विप्रगण ज्योतिषीय खोज करने के पश्चात कहते हैं कि–

''मधुमास नौसी तिथ शुक्ल पक्ष नक्षत्र पुनर्वसु इन चारों के
ग्रह बार जोग चर और अचर मुआफक हैं राय हमारी के
इस रास लग्न प्रकाश हुआ सुर मगन त्रिलोकी सारी के।''[10]

उक्त मुक्तताल में कवि के माध्यम से गुरूजन बताते हैं कि मधुमास की नौमी तिथि के शुक्ल पक्ष और पुर्नवसु नक्षत्र में रामचन्द्र का जन्म हुआ हैं। सभी ग्रह, बार, योग, चर–अचर इनके पक्ष में हैं। इस राशि से लग्न में जो प्रकाश हुआ है, उससे सभी देवता प्रशन्न है। कवि कहते हैं–

''कुण्डली बनाई नाम राशि ठहराई ''
लक्ष्मण शत्रुध्न भरत रामचन्द्र रघुराई''[11]

विस्तृत ज्योतिष ज्ञान से परिपूर्ण अहमदबख्स कहते हैं, राजा दशरथ गुरूजनों से पूछते हैं कि, जरा स्पष्ट रूप से कुण्डली का विवरण बताइयें लग्न, वर्ग, राशि, नक्षत्र योग के अतिरिक्त यह भी जानकारी दीजिए कि कौन सा ग्रह किस भाव में बैठा हैं, उन ग्रहों का बलतेज (अंश) और भाग्य तथा बुद्धि कितना प्रबल है, तिथि व ग्रहों की अवस्था के साथ–साथ इनका 'भोग' काल बताते हुए सुख –व दुखों का वर्णन कीजिए–

लग्न कहो वर्ग कहो क्या राशि है
नक्षत्र कहो और योग कहो फिर किस किस घर ग्रह बासी है
बलतेज कहो और योग कहो और कितनी बुध परकाशी है
तिथ अवस्था कहो और भोग कहो क्या सुख है परम उदासी है।।[12]

अहमदबख्स का ज्योतिष ज्ञान देखिये–जन्म कुण्डली में धरों (भावों) के महत्व को रेखांकित करने के लिए, वे उन भावों के अलग, अलग फलों को जानने के लिए राजा दशरथ से प्रश्न करते हैं–

मुनि जी यह प्रश्न कहो मेरा
इस लग्न स्थान कौन ग्रह है और तृतीय घर है किसका फेरा
फिर चौथे घर और सतम घर नवें घर है किसका डेरा
फिर दसवें घर और ग्यारह को कहो कौन ग्रह ने आन धेरा।[13]

कवि अहमद बख्स कहते हैं कि राजा के प्रश्न का उत्तर देते गुरूजन रामचन्द्र की कुण्डली कर्क लग्न की है। इस कर्क लग्न की कुण्डली में बृहस्पति और चन्द्रमा लग्न स्थान में पड़े हैं, तृतीय घर में राहु कन्या राशि का है और चौथे घर में शनि तुला का है, पांचवे भाव मकर है किन्तु मंगल सातवें घर में बैठा है, शुक्र मीन के हैं केतु के साथ और सूर्य मेष के हैं– कवि अहमदबख्स के अनुसार रामचन्द्र की कुण्डली निम्न प्रकार बनती हैं–

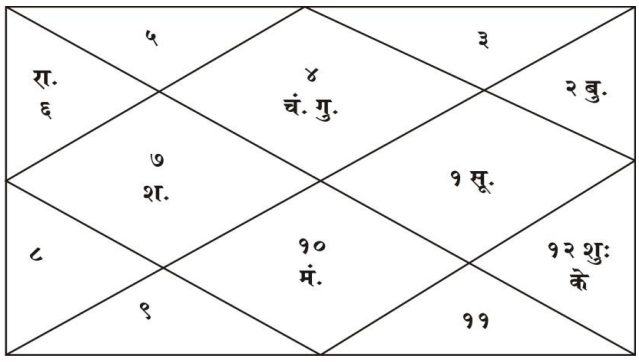

आकृति 1

इस कुण्डली में ही कवि अहमद बख्स के अनुसार बुध वृषभ के एंव सभी ग्रह उच्च के हैं।– कवि का प्रस्तुतीकरण देखें –

अरे राजन रामचन्द्र के जन्म का हमसे सुनो बखान
कर्क ब्रहस्पति चन्द्रमा पड़े लग्न अस्थान
तृतीय घर राहू कन्या का आया
फिर चौथे शनी तुला का है
सब सुख दायक कारज दाया
फिर पंचम मंगल मकर का है घर सप्तम में फेरा पाया फिर
शुक्र मीन के सहित केतु और सूर्य मेष का बतलाया।[14]

उपर्युक्त मुकताल में अहमदबख्स ने रामचन्द्र की पूर्ण कुण्डली बनाई है। बहुत ही सधे ज्योतिषी की भॉति वे रामचन्द्र की कुण्डली ही नहीं बनाते, बल्कि उस कुण्डली में बैठे ग्रहों का फल भी बताते हैं –लेकिन फल बताने से पूर्व राजा दशरथ भी किसी विज्ञ व्यक्ति की तरह प्रश्न पूंछते हैं, वे बृहस्पति चन्द्र का योग (गुरू चन्द्र योग) का फल ही नहीं पूछते बल्कि कर्क लग्न में पड़े होने से क्या फल होता है, तथा ग्रहों के उच्च का होने से क्या फल होता है' और कर्क लग्न का पृथक से क्या फल होता है?–

गुरू जी चन्द्र बृहस्पिति कर्क के पड़े लग्न किस काम
किस फल को प्राप्त हुए कहो वशिष्ट गुरू नाम
ग्रहों का क्या असर होना चाहिये
बृहस्पति चन्द्र का योग पड़ा इसका नितार होना चाहिये
फिर दोनों कर्क लग्न पड़ रहे सुख किस प्रकार होना चाहिये
तुम इनको उच्च बतातें हो, उच्च का विचार होना चाहिए।
मुकताल–
कह दो विधि सारी ग्रह किस फल अधिकारी
रामचन्द्र के जन्म कर्क को कौन विचारी।"[15]

कविवर अहमदबख्स ग्रहों का फल बताते हैं, तो लगता है उन्होने ज्योतिष का गहन अध्ययन किया है, वे उन ग्रहों के फल का वर्णन करते हैं, जब जो ग्रह जिस स्थान में बैठा है, और वह किस राशि का हैं। उस ग्रह की दृष्टि का फल और राशि के अनुसार उसका फल क्या रहेगा, इन सभी प्रश्नों को करना, और फिर उनके सटीक उत्तर देना, किसी कुशल ज्योतिष शास्त्री की तरह अहमद बख्स ने अपनी रामायण में इसे सफलता पूर्वक वर्णित किया है–

तृतीय घर राहु कन्या का कहो यह क्या कुछ फलदायक है
चौथे घर शनि तुला का है किस कारण बीच सहायक है
मुझे असल विथा वर्णन कर दो ग्रह जो जो कुछ जिस लायक है।"[16]

राजा दशरथ के इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए गुरू वशिष्ठ सभी ग्रहों के भावों, राशियों और फलों का उत्तर देते हैं–वे कहते हैं कि कन्या का राहु तीसरे स्थान में पड़ा है तो तेरा पुत्र सिंह की हस्ती वाला बलवान होगा और जग में यश अर्जित करेगा, चौथे घर में जो शानि तुला का है, वह कष्ट कारक रहेगा, उसके फलस्वरूप ये पुत्र अपने पिता का मुल्क छोड़कर चला जावेगा और माँ, बाप, भाई सभी को दुख होगा, साथ ही खुद भी कष्ट उठाऐगा, तथा घोर विपत्तियों को भोगकर पुनः पिता के मुल्क में वापस आवेगा और राजनीति करेगा, घर्म को स्थापित करेगा।–तेरा पुत्र रामचन्द्र एक बार बड़ा कष्ट उठावेगा।–

कन्या का राहु पड़ा उस तीजे अस्थान
हो ऐसा बल तेरे पुत्र मां
सिंह हस्ती भयवान प्रताजी यश जग को दिखलावेगा
चौथे घर शनि तुला का है तज मुलक पिता का जावेगा
माँ बाप भ्रात को दुःख होगा अपने सिर कष्ट उठावेगा,
कई वर्ष भुगत इस विपता को हट मुलक पिता के आवेगा।"
मुकताल–
फिर राज कमावे धर्म की पत बिठलावे
रामचन्द्र तेरा पुत्र एक बार कष्ट उठावे ।।[16]

जब गुरू वशिष्ठ से यह प्रश्न किया जाता है कि सप्तम घर में मकर के मंगल से क्या फल उत्पन्न होगा और मीन के शुक्र केतु का योग क्या स्थिति उत्पन्न करेगा–तब अहमद बख्स गुरू वशिष्ठ के माध्यम से इन ग्रहों का फल बताते हुए कहते हैं कि मकर का मंगल होने के कारण किसी दुर्जन व्यक्ति से जंग होगी, लेकिन उस दुर्जन व्यक्ति का विनाश होगा और इनकी विजय होगी– परन्तु सप्तम भाव में मंगल की उपस्थित नारी को कष्ट कारक बनेगी– नारी वियोग होगा, तथा उसे पुनः प्राप्त करना कठिन कार्य होगा। अरे राजा नवें घर के शुक्र का फल सुनो– तेरा रामचन्द्र ब्रहमज्ञानी होगा तथा ब्रहमचारी के वेष में रहेगा, तथा केतु के कारण कष्ट उठावेगा।

सुन फल मंगल मकर का हो दुर्जन से जंग
उनका विधन विनाश हो जै होगी प्रभु संग
एक फिर परम कष्ट हो नारी का
नारी के ढूडन के कारण होगा सिर काम लाचारी का
फलादेश और सुन ऐ राजन घर नवें शुक्र बलकारी का
तेरा रामचन्द्र हो ब्रहमज्ञानी धारेगा वेष ब्रहमज्ञानी का
मुकताल–
क्या हुई ऋषि बरणी सिरफ हेतु की करणी
रामचन्द्र ने तेरे कठिन बिपता सिर धरनी।।[17]

कवि अहमदबख्स की ज्योतिष में निपुणता देखिये कि वे दशाओं कि भोगकाल की बात करते हैं, गुण, तिथि, नक्षत्र, शगुन, सभी दृष्टियों से जन्म कुण्डली को शोध–शोध कर देखने की बात करते हैं। फलादेश भी भारतीय ज्योतिष के अनुसार ही कहते हैं। फलादेश बताते हुए कहते हैं कि वृष का बुध ग्यारहवें स्थान का सूर्य तरन–तारन अर्थात् सभी परिवार, राजसत्ता को पार लगाने वाला, और राज काज में प्रजा का हित करेगा। लेकिन जन्म के बीस बरस बाद जननी को बहुत दारूण दुख होगा, दसम भाव में उच्च का सूर्य पड़ा है, कठिनाई जरूर होगी।–

सुन दशरथ रघुवंश के रामचन्द्र वृतंत
बुध वृष का है ग्यारवें प्राप्त हो धन बेअंत
बिना इच्छा होकर धारन राजन
दसवें अस्थान पड़ा सूरज यह पुत्र तरन तारन राजन
फिर राज काज में हित होगा
रक्षपाल धर्म कारन राजन
जननी को बीस बरस पीछे दुख बहुत कष्ट दारूण राजन

मुकताल–
बिछड़े रधुराई नार ढूढ़त सुखदाई
पड़ा उच्च का का सूर्य जरूर होगी कठिनाई।[18]

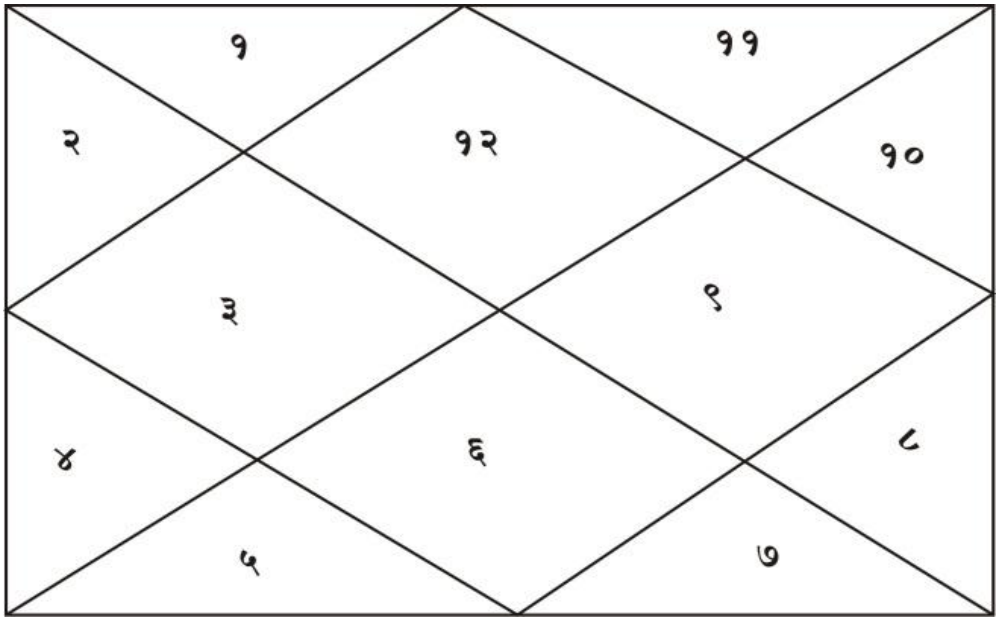

आकृति 2

इसी तरह कवि अहमद बख्स ने रामचन्द्र के अतिरिक्त लक्ष्मण, भरत और शत्रुधन की जन्म कुण्डली भी बनाई है। और तीनों का ही जन्म नक्षत्र, राशि, लग्न बताकर तीनों का फलादेश गुरू वशिष्ठ के माध्यम से किया है। उन्होंने कहा कि भरत का जन्म मीन लग्न होते। पुख्य नक्षत्र में हुआ हैं। भरत शरीर से बलवान होगें यदि हम यही कवि अहमद बख्स के अनुसार भरत की कुण्डली बनावें, तो इस प्रकार बनेगी–

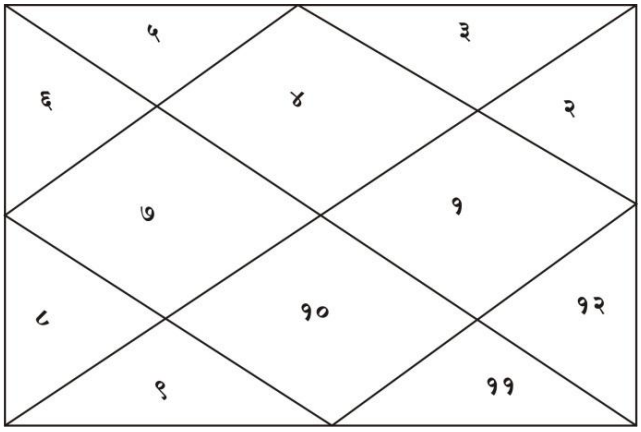

आकृति 3

इसी तरह लक्ष्मण की जन्म कुण्डली के सम्बध में वे बताते हैं कि लक्ष्मण का जन्म कर्क लग्न तथा आश्लेषा नक्षत्र में हुआ है, लक्ष्मण भी वीर होगें; क्षत्रिय धर्म का पालन करेंगे, थोडा बिलासी होंगे, शत्रुघन का जन्म भी उन्होंने इसी लग्न (कर्क) में बताया है कि लक्ष्मण तरूण अवस्था में कष्ट भोगेंगे और शत्रुध्न से घर में वेदों और ज्ञान का प्रकाश होगा। लक्ष्मण और शत्रुधन की कुण्डली कर्क लग्न की है–

इस प्रकार अहमदबख्स थानेसरी कृत रामायण में राम के चरित्र महिमा का गान है, जिसे उन्होंने बाल्मीकी और तुलसीदास दोनों के ही ग्रंथों से लिया है। 'सांग' पद्वति से रचित यह रामायण अहमदबख्स थानेसरी के हिन्दू धर्म के ज्ञान को दर्शाती है। हिन्दू जीवन पद्वति, संस्कार, परम्पराओं और विधाओं का प्रगाढ़ ज्ञान अहमद बख्स को था। भारतीय दर्शन और ज्योतिष के प्रति उनका श्रद्वा और समर्पण है, जो उन्हें इस देश के प्रति निष्ठावान और अनुरागी बनाता है।

सन्दर्भ

1. सम्पादक–बालकृष्ण मुज़्तर–अहमदबख्स थानेसरी कृत रामायण–प्रस्ताव भाग
2. सम्पादक–बालकृष्ण मुज़्तर–अहमदबख्स थानेसरी कृत रामायण–पृ0(ग)
3. सम्पादक– बालकृष्ण मुज़्तर–अहमदबख्स थानेसरी कृत रामायण पृ0(ग्प).
4. अहमदबख्स थानेसरी कृत रामायण–प्रथम भेंट.
5. अहमदबख्स थानेसरी कृत रामायण–द्वितीय भेंट
6. अहमदबख्स थानेसरी कृत रामायण–(ग्प्प).
7. अहमदबख्स थानेसरी कृत रामायण–(ग्प्प्प).
8. अहमदबख्स थानेसरी कृत रामायण–आदिकाण्ड–पृ0 47.
9. अहमदबख्स थानेसरीकृत रामायण–आदिकाण्ड–प्रकाशक हरियाणा साहित्य अकादमी–चंण्ड़ीगढ़–पृ0 47
10. अहमदबख्स थानेसरी कृत रामायण–आदिकाण्ड–प्रकाशक हरियाणा साहित्य अकादमी–चंण्डीगढ–पृ 47
11. वही–पृ0 47.
12. 12. वही–पृ0 48.
13. 13.अहमदबख्स थानेसरी कृत रामायण–आदिकाण्ड–प्रकाशक हरियाणा साहित्य अकादमी चंण्डीगढ़ पृ0 48.–
14. 14. वही–पृ0 49– प्रकाशन वर्ष–प्रथम सस्मंण–1983.
15. 15. वही–पृ0 49–प्रकाशन वर्ष– प्रथम सस्मंण–1983.
16. वही पृ0 50.
17. वही पृ0 51.

वही पृ0 52.